International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

झारखंड की लुप्तप्राय भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन

डॉ. वर्षा शालिनी कुल्लू

सहायक प्रोफेसर, हन्दी विभाग, गोस्सनर कॉलेज, रांची, झारखण्ड

झारखंड की लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए कई कदम उठाए जा सकते हैं। सबसे पहले, इन भाषाओं को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करना आवश्यक है ताकि नई पीढ़ी इन भाषाओं से परिचित हो सके। इसके अलावा, इन भाषाओं में साहित्य, संगीत और कला को प्रोत्साहित करने से भी इन भाषाओं को जीवित रखने में मदद मिल सकती है। इसके साथ ही, झारखंड सरकार द्वारा लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण के लिए विशेष योजनाएं और कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, सरकार द्वारा इन भाषाओं के लिए भाषा शिक्षकों की नियुक्ति की जा सकती है, या इन भाषाओं में पुस्तकों और साहित्य के प्रकाशन को प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसके अलावा, स्थानीय समुदायों को भी इन भाषाओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। वे अपनी भाषाओं को जीवित रखने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों और आयोजनों का आयोजन कर सकते हैं। इन सभी प्रयासों से झारखंड की लुप्तप्राय भाषाओं को संरक्षित और संवर्धित किया जा सकता है, जिससे राज्य की सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित किया जा सके।

22 फरवरी 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने मन की बात में कहा था कि जैसे हमारी जीवन को हमारी मां गढ़ती है वैसे ही मातृभाषा हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वंद में जी रहे हैं जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे और अपने खान पान को लेकर एक संकोच होता है जबकि विश्व में कहीं ऐसा नहीं होता है। हमारी मातृभाषा है, हमें गर्व के साथ उसे बोलना चाहिए।

झारखंड में कुड़माली खोरठा मुंडारी, नागपुरी और हो जैसे महत्पपूर्ण भाषा बोली जाती है। जो ना केवल लाखों लोगों की मातृभाषा है बल्कि उनकी सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पहचान भी है। भगवान बिरसा मुंडा के आंदोलन की भाषा भी मुंडारी थी। जिसकी अपनी समृद्ध पृष्ठभूमि रही है। यह भाषा मुंडा समुदाय की पहचान है। जिनका झारखंड के इतिहास और संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हो भाषा सिंहभूम क्षेत्र में विशेष रूप से बोली जाती है। और इसके बोलने वाले हो जनजाति के लोग बड़ी संख्या में है। इसी तरह कुड़माली भाषा का संबंध बंगाल एंव झारखंड के राढ़ सिविलाइजेशन से है। कुड़माली भाषा झारखंड, पश्चिम बंगाल और उड़िसा के कुड़मी समुदाय द्वारा बोली जाती है। इसका साहित्यक और सांस्कृतिक महत्व भी

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

अधिक है। नागपुरी भाषा भी झारखंड की राजधानी सहित पूरे राज्य में व्यापक रूप से संवाद की मूल भाषा है। नई शिक्षा नीति के तहत भी स्थानीय भाषाओं का स्कूली शिक्षा में प्रयोग व्यापक रूप से होना चाहिये। इन भाषाओं का संविधान की आठवी अनुसूची में शामिल ना किये जाने से इनका उस स्तर तक प्रयोग नहीं हो पाता है जितना होना चाहिए। इन भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और शिक्षण में कई बाधाएं उतपन्न होती है। कुड़माली, मुंडारी, खोरठा और हो भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल किया जाए। इन भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन विकास एंव अध्ययन हेतु केंद्र एव राज्य सरकार द्वारा विशेष योजना और अनुदान प्रदान किया जाए जिससे इसका विकास हो सके।

डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान इसके लिए प्रयासरत है, लुप्तप्राय कोरबा, सबर और परहिया को लेकर जल्द ही इन आदिम जनजातीय भाषाओं की पुस्तकों का प्रकाषन किया जायेगा,झारखंड में 32 जनजातीय भाषा है जिनके अस्तित्व पर संकट है। इन्हें संरक्षित करने के लिए इन दिनों डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान प्रयास कर रहा है, संस्थान द्वारा पहली बार कोरबा, सबर और परहिया जैसी जनजातीय भाषाओं के व्याकरण से लेकर गद्य–पद्य की पुस्तकें प्रकाशित करने की तैयारी की गयी है।

झारखंड में बदलते समय के साथ आदिम जनजातियों के द्वारा बोली जाने वाली पारंपरिक भाषा और बोली भी लुप्तप्राय होती जा रही है। जिन आदिम जनजाति से जुड़ी भाषा और बोली विलुप्ति के कगार पर है, उसमें असुर, सौरिया, पहाड़िया, परहिया, कोरबा, बिरजिया, बिरहोरऔर सबर जैसी भाषा शामिल है। पांच आदिम जनजातीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तक का लोकार्पण 15 नवंबर को राज्यपाल और मुख्यमंत्री के हाथों किया गया था, इसमें शेष बचे तीन आदिम जनजाति भाषा की पुस्तकें तैयार की जा रही है, जिसके लिए विशेष तौर पर लोहरदगा के एक शिक्षक को लगाया गया है। ये शिक्षक आदिवासी समाज में प्रचलित वस्तुओं का रेखाचित्र बनाकर किताबों के माध्यम से बच्चों तक पहुंचाने का काम करते है।

यूनिसेफ के रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में करीब 2000 भाषा और बोली ऐसी हैं जो विलुप्त हो रही हैं, कहा जाता है कि किसी भी समाज के लिए भाषा वहां उसके लिए शरीर रुपी रीढ है, यदि यह लुप्त हो जाय तो उस समाज का क्या होगा यह कल्पना की जा सकती है, लुप्त हो रहे भाषा और बोली भारत सहित पूरी दुनिया के लिए आज के समय विशेष चिंता का कारण है।

एक रिपोर्ट के अनुसार सबसे ज्यादा विलुप्त हो रहे भाषा में भारत दुनिया में नंबर वन पर है उसी तरह दूसरे नंबर पर अमेरिका और तीसरे नंबर पर इंडोनेशिया है, एक आंकड़े के अनुसार पिछले 50 साल में भारत की करीब 20 फीसदी भाषाएं विलुप्त हो गयी हैं, विलुप्त हो रहे भाषाओं से झारखंड अछुता नहीं है. यहां भी

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

जनजातीय क्षेत्रों में बोली जानेवाली कई भाषाएं विलुप्ति के कगार पर हैं, इन्हें संरक्षित करने का प्रयास झारखंड के ऐसे लोगों ने किया है जो ना तो साहित्य क्षेत्र से जुड़े हैं और ना ही कोई विशेष योग्यता धारी हैं, ग्रामीण परिवेश में जीवन यापन करते हुए इन लोगों ने ना केवल चित्रावली आधारित किताब तैयार किया है बल्कि इन लुप्त होते भाषाओं का व्याकरण की रचना कर एक अभिनव प्रयोग कर डाला है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है जिसका सीधा जुड़ाव वहां की भाषा और संस्कृति से होता है, इसके बिना किसी भी समाज की संस्कृति और सभ्यता का पता करना बेहद ही मुश्किल है, यही वजह है कि आज भी इतिहास के पन्नों में इन्हें सहेजकर रखने की परंपरा जीवित है, लेकिन झारखंड में इसके प्रति उदासीनता दिखती है।

झारखंड देश का एकमात्र ऐसा राज्य है जहां क्षेत्रीय या राष्ट्रीय भाषा के संवर्धन के लिए कोई अकादमी तक नहीं है, पिछले रघुवर सरकार के कार्यकाल में हिंदी, उर्दू सहित कुछ क्षेत्रीय भाषाओं के अकादमी खोलने की घोषणा भी की गई थी मगर वो भी सरकार बदलने के साथ समाप्त हो गयी। वर्तमान सरकार भी लगभग इसी राह पर है, भाषा अकादमी खोलने को लेकर सरकार ने क्षेत्रीय जनजातीय भाषाओं के लिए अकादमी बनाने का निर्णय भी लिया, मगर यह भी सरकारी उलझनों में फंस कर रह गया है।

झारखंड में भाषा को लेकर उठे विवाद के बाद भाषा अकादमी खोलने की मांग दब गई है लंबे समय से भाषा अकादमी की मांग कर रहे मैथिली के जाने माने साहित्यकार सियाराम झा सरस कहते हैं कि दृढ इच्छाशक्ति की कमी के कारण यहां अब तक भाषा अकादमी नहीं खोला जा सका, जबकि छत्तीसगढ़ इससे कहीं आगे निकल चुका है। राज्यपाल से लेकर मुख्यमंत्री तक कई बार गुहार लगाने के बावजूद अब तक अकादमी नहीं बनाया जाना सरकार की इच्छाशक्ति को दर्शाता है, जबकि इसके माध्यम से ना केवल भाषा का संवर्धन होगा, बल्कि झारखंड की संस्कृति और सभ्यता को युगों युगों तक जाना जायेगा।

उर्दू के प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. मंजर हुसैन सरकार की वादाखिलाफी से बेहद नाराज दिख रहे हैं, उन्होंने बिहार की तरह झारखंड में उर्दू अकादमी, उर्दू निदेशालय आदि खोलने की मांग करते हुए कहा कि इसके होने से उर्दू भाषा का विकास और उस पर रिसर्च का काम हो सकेगा। उन्होंने कहा कि 22 वर्षों में जो भी सरकारें आई सभी ने आश्वासन दिया मगर भाषा अकादमी खोलने पर गंभीरता नहीं दिखाई।

झारखंड में कुल 17 भाषा द्वितीय राजभाषा में शामिल हैं। 10 दिसंबर 2018 को प्रकाशित झारखंड गजट के अनुसार राज्य में उर्दू, संथाली, बांग्ला, खड़िया, मुंडारी, हो, कुडुख, कुरमाली, खोरठा, नागपुरी, पंचपरगनिया, उड़िया, मगही, भोजपुरी, मैथिली, अंगिका एवं भूमिज भाषा को मान्यता दी गई है। मैथिली को छोड़कर सभी भाषाओं को जेएसएससी की मैट्रिक–इंटर स्तर की प्रतियोगिता परीक्षा में मान्यता दी गई ळें

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

झारखंड में कई लुप्तप्राय भाषाएं हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख भाषाएं निम्नलिखित हैं :–

1. **हो भाषा** – यह झारखंड की एक प्रमुख आदिवासी भाषा है, जो मुंडा भाषा परिवार से संबंधित है। हो भाषा के लगभग 10 लाख से अधिक वक्ता हैं।
2. **संताली भाषा** – यह झारखंड की एक अन्य प्रमुख आदिवासी भाषा है, जो मुंडा भाषा परिवार से संबंधित है। संताली भाषा के लगभग 70 लाख से अधिक वक्ता हैं।
3. **मुंडारी भाषा** – यह झारखंड की एक आदिवासी भाषा है, जो मुंडा भाषा परिवार से संबंधित है। मुंडारी भाषा के लगभग 10 लाख से अधिक वक्ता हैं।
4. **खोरठा भाषा** – यह झारखंड की एक आदिवासी भाषा है, जो मुंडा भाषा परिवार से संबंधित है। खोरठा भाषा के लगभग 4 लाख से अधिक वक्ता हैं।
5. **पंचपरगनिया भाषा** – यह झारखंड की एक आदिवासी भाषा है, जो मुंडा भाषा परिवार से संबंधित है। पंचपरगनिया भाषा के लगभग 2 लाख से अधिक वक्ता हैं।
6. **कुड़माली भाषा** – यह झारखंड की एक आदिवासी भाषा है, जो मुंडा भाषा परिवार से संबंधित है। कुड़माली भाषा के लगभग 1 लाख से अधिक वक्ता हैं।
7. **नागपुरी भाषा** – यह झारखंड की एक आदिवासी भाषा है, जो मुंडा भाषा परिवार से संबंधित है। नागपुरी भाषा के लगभग 50,000 से अधिक वक्ता हैं।
8. **खोंड भाषा** – यह झारखंड की एक आदिवासी भाषा है, जो मुंडा भाषा परिवार से संबंधित है। खोंड भाषा के लगभग 30,000 से अधिक वक्ता हैं।
9. **बिरहोर भाषा** – यह झारखंड की एक आदिवासी भाषा है, जो मुंडा भाषा परिवार से संबंधित है। बिरहोर भाषा के लगभग 20,000 से अधिक वक्ता हैं।
10. **कोरवा भाषा** – यह झारखंड की एक आदिवासी भाषा है, जो मुंडा भाषा परिवार से संबंधित है। कोरवा भाषा के लगभग 10,000 से अधिक वक्ता हैं।

इन भाषाओं को संरक्षित और संवर्धित करने के लिए झारखंड सरकार और अन्य संगठनों द्वारा कई कदम उठाए जा रहे हैं।

झारखंड की लुप्तप्राय भाषाओं का संरक्षण एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। झारखंड में कई आदिवासी भाषाएं हैं, जिनमें से कई लुप्त होने के कगार पर हैं।इन भाषाओं के लुप्त होने के कई कारण हैं, जिनमें शहरीकरण, वैश्वीकरण, और मीडिया की उपेक्षा शामिल हैं। इसके अलावा, सरकारी समर्थन की कमी और शैक्षिक प्रणाली में इन भाषाओं की अनदेखी भी एक महत्वपूर्ण कारण है।इन

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

भाषाओं के संरक्षण के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं, जिनमें सरकारी कार्यक्रम, भाषा विज्ञान के सर्वेक्षण, और समुदाय–आधारित परियोजनाएं शामिल हैं। इसके अलावा, प्रौद्योगिकी का उपयोग करके इन भाषाओं को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर प्रमोट करने का प्रयास किया जा रहा है।इन प्रयासों के बावजूद, झारखंड की लुप्तप्राय भाषाओं का संरक्षण एक चुनौतीपूर्ण काम है, जिस पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमें इन भाषाओं के महत्व को समझना चाहिए और उनके संरक्षण के लिए एकजुट होना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. साहित्य सरोवर,2023,झारखंड के स्वतंत्रता सेनानी एवं देष भक्त बिरसामुंडा, साहित्य सरोवर पब्लिकेषन।
2. मुर्मू, डेविड, 2023 झारखंड के संथालों में सामाजिक परिवर्तन, प्रिया साहित्य सदन।
3. साहित्य सरोवर,2024,झारखंड का इतिहास, साहित्य सरोवर पब्लिकेषन।
4. दत्ता, अमृता, 2022, झारखंड में स्थापत्य कला का विकास, प्रिया साहित्य सदन।
5. पाण्डेय, शत्रुघ्न कुमार, 2024, झारखंड का इतिहास, साहित्य भवन पब्लिकेषन।
6. रघुवंषी, कमलेष, 2024, और कितन वक्त चाहिये झारखंड को, प्रभात प्रकाषन।